कौन कहता है भारतीय हूँ मैं

बाँट दिया है भारतीयता को
बाईस टुकडों में
भारतवासियों ने -
नहीं जानती
भारतीयता की इस कोख से
कौनसा टुकडा उभरकर कहेगा
भारतीय हुँ मैं ...।

भारतमाता के गले के हार से
एक फूल और उतर जाये
और भारतीयता का बोझ भारी कर जाये
तोडा है मैंने फूलों के पिरोये हार को
और कहा है -
विविधता में एकता है
एकता में विविधता है....।

हकीकत से मुझमें
न विविधता है
न एकता है
न भारतीयता है

कहीं पंजाब हूँ मैं, कहीं कश्मीर हूँ मैं
कहीं महाराष्ट्र हूँ मैं, कहीं तामिलनाडु...
कहीं आंध्र प्रदेश हूँ, कहीं गोवा...
किसके और कितने नाम गिनाऊँ
बाईस के बाईस नाम सुनो
कहीं भी भारतीयता दृष्टव्य होती नहीं
कही भी मेरी दृष्टि में अंतर दिखता नहीं
तभी तो होते हैं -

नदियों के पानी के झगडे
जमीन के टुकडों के झगडे
जंगलों के पेडों के झगडे
मेरे राज्य में सबकुछ मेरा
तेरे राज्य में सबकुछ तेरा।

कहाँ है हमारी अपनी अस्मिता -
भारत, भारतीयता -
एकता, विविधता, पंचशीलता
सभी कुछ खोखले हैं अपने आवरण में
मुझमें है जैसे अपना ही खोखला अहम्

पानी के झगडों में, पानी समुद्र में
जमीन के झगडों में, जमीन टुकडों में
जंगलों के झगडों में, जंगल कटाई में
राज्यों के झगडों में, देश कटाई में
देश के झगडों में, विश्व कटाई में
क्या हम विश्वमित्र हैं?

विश्व और मैत्री-भाव तो दूर
क्या हम इन्सान हैं?
भारतीयता तो दूर
क्या हम में इन्सानियत है?

अतीव है भारतीयता का भार
तिरंगा है क्षत-विक्षत
घायल हैं हम सब
उस पर है यह शोर
हम भारतीय हैं
मैं भारतीय हूँ...।

आज तक कूप मंडूक रहा हूँ मैं
नहीं होती है जब तक 'मैं' की परिधि 'हम' में
नहीं हूँ भारतीय मैं
नहीं हूँ अक्षरशः भारतीय मैं
कहीं पंजाब हुँ मैं, कहीं कश्मीर हूँ
महाराष्ट्र हूँ, आंध्र हूँ, बंगाल हूँ
सबकुछ हूँ पर
नहीं हूँ भारतीय मैं ... ।
संकुचित परिधि में विचरता
तुच्छ जीव हूँ मैं
भारतीय मानना अपने आपको
अपमान है यह राष्ट्रपिता का
अपमान है यह
हिमालय पर आच्छादित 'मानवता' का
अपमान है यह
बंगाल की खाडी का
अरब सागर का
हिंद महासागर का
अपमान है यह विश्वगान का
अपमान है यह 'भारतीय' शब्द के मान का...।

मार्मिक दंश है यह मेरी चेतना पर
अपमान दंश है यह मेरी भावना पर
जिन्हें सुनाना चाहती हूँ यह भावनात्मक कविता
सोये हुए हैं वे कुंभकर्ण सी गाफिली में
मेरी 'भारतीयता' देखकर सब यह
तिलमिलाती है, तडपती है, मचलती है
आक्रोश व्यक्त करती है
नही हूँ भारतीय मैं
नहीं हूँ भारतीय मैं।

- चंद्रलेखा डी सौजा

ध्यान में रखो

० दुनिया का सबसे बढिया मकान आपका अपना शरीर है।

० पानी शरीर को और सचाई दिल को साफ करती है।

० कम बोलना और कम खाना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।